अध्याय - ४

तिलचट्टा का परिचय और प्रतीकात्मकता

प्रकरण – 4

तिलचट्टा का परिचय और प्रतीकात्मकता

'तिलचट्टा' की कहानी किसी विशेष व्यक्ति की कहानी न होकर किसी भी आदमी की कहानी हो सकती है। क्योंकि व्यक्ति भिन्नता होने से आदमी बदल जाता है, लेकिन परिस्थितियाँ वेही रहती हैं। आज के जीवन में परिस्थितियों का बडा योग है। परिस्थितियों के अधीन होकर आज का हर व्यक्ति यातना और तनाव को भोग रहा है।

तिलचट्टा में वर्तमान जीवन के टूटते हुए संबंधों, मध्यमवर्गीय परिवार के कलहपूर्ण यौन संबंध, वातावरण, विघटन, संत्रास, व्यक्ति के अधूरे व्यक्तित्व तथा अस्तित्व का यथातथ्यात्मक सजीव चित्रण हुआ है। केशी के दृष्टि में देव एक लिजलिजा आत्मविश्वासहीन नकारा निकम्मा और दब्बू किस्म का आदमी है, जो आर्थिक दृष्टि से उस पर व्यर्थ का बोझ बना हुआ है।

यह नाटक अपूर्ण, खंडित, अधूरे व्यक्ति के आत्मसाक्षात्कार का नाटक है। दर्शन ग्रंथों में पूर्ण केवल ब्रह्म को माना गया है। शेष समस्त चराचर जगत अपने में अपूर्ण है। सजीव और सज्ञान मनुष्य ही ऐसा जीव है, जिसे अपनी अपूर्णता का एहसास है। और पूर्णता की प्राप्ति की तलाश में वह सनातन काल से भटकता भी आया है। कभी उसकी तलाश वस्तुजगत से सम्बध्द रही है, कभी योग भक्ति और तपस्या के द्वारा आत्मसाक्षत्कार को पूर्णता समझा गया। कभी ज्ञान की तलाश में आदमी भटका, तो कभी अपने में ही अपने आपको खोजने की कोशिश की गई। नर–नारी संबंध भी अछूता नहीं बचा और आदम–हव्वा के जमाने से पुरूष स्त्री में, स्त्री पुरूष में अपनी पूर्णता पाने की कोशिशें करते रहें। स्त्री पुरूष जीवन रथ के दो पहिये माने गये हैं। और दोनों की स्वतंत्र अस्मिता भी स्वीकार की गई है। पर स्वयं में पूर्णता नहीं । दोनों एक दूसरे से जुडकर ही पूर्ण होते हैं।

स्त्री और पुरूष दो स्वतंत्र इकाई है। दोनों का स्वतंत्र पृथक व्यक्तित्व है, दोनों की अपनी अस्मिता, अपनी पृथक पहचान और दोनों की अपना पृथक अस्तित्व है। इस पृथकता के बावजूद ऊपरी प्रकृति से एक दूसरे के प्रति समर्पित होने के लिए विवश भी है। स्त्री पुरूष के रूप में जब दो विपरित प्रकृति की इकाइयाँ मिलती है। वहाँ एक नये की सृष्टि होती है। क्योंकि यह मिलना केवल भौतिक शरीरों का ही नहीं, दो रसायनों का ही नही, दो आत्माओं का मिलन भी होता है। नर नारी संबंधों में इस समर्पण और पारस्पारिक मिलन की बात जितनी सच है उतनी ही सच बात यह भी है कि पारस्परिक समर्पण और मिलन में हर जगह और हर समय दोनों के व्यक्तित्व का अहम का विलय नहीं हो पाता। इस कारण स्वाभाविक रूप से दो व्यक्तियों के बीच संघर्ष की स्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। इस संघर्ष के बावजूद यह सत्य है कि दोनों अपनी अपनी पूर्णता में अपूर्ण है। स्त्री–पुरूष को और पुरूष स्त्री को एक दूसरे की पूर्णता में पूर्णता के साथ पाना और इस प्रकार अपने आपको संपूर्ण करना चाहता है। संपूर्णता शब्द यहाँ इसलिए महत्वपूर्ण है कि समरूप से पूर्ण होकर भी दोनों अपूर्ण हैं और मिलने पर ही संपूर्ण। स्त्री और पुरूष एक दूसरे को पाने के लिए कितनी तपस्या, साधना, बलिदान और त्याग करते है, पर जब दोनों मिलते है तो संघर्ष और विरोध की चिनगारियाँ छूटने लगती है। किसी भी स्त्री के मन में यह आकांक्षा होती है कि पुरूष में उसे वह पूर्णता मिले जो स्वयं उसमें नहीं। चूँकि अधूरापन एक आधुनिक धारणा है। एक युग था जब धर्म और विज्ञान पर अलग–अलग आस्था रखनेवाले लोग मनुष्य की पूर्णता की संभावनाओं के प्रति आश्वस्त थे। तब महामानव की धारणा थी, वैज्ञानिक, प्रगति और देवत्व के विश्वास के आधार पर मानव के संबंध में मसी–हाई घोषणाएँ हुई थी। किंतु दो महायुध्दों के बाद आशावादी स्वर इतने भेद पड गये, कि मानव को महामानव की प्रतिष्ठा दिलाना तो दूर रहा उसकी लघुता और अपूर्णता को ही उसकी पूंजी मान बैठना युगचिंतन का महत्वपूर्ण अंग बन गया। दर असल पूंजीवादी व्यवस्था, विज्ञान के परिणाम मानव के लिए इतने भयंकर सिध्द हुए कि आज वह साध्य न होकर साधन मात्र बनकर रह गया है। वैज्ञानिक यंत्रवाद की यंत्रणा ने इस विध्वंस को समूल उखाडकर फेंक दिया। मनुष्य पूर्ण है या हो सकता है। इसके साथ ही इतिहास और परम्परा अथवा आदर्शवाद के विरूध्द जो प्रवृत्तियाँ

आज सक्रिय है। वे मानव का अवमूल्यन करने के लिए कटिबध्द है। समाज अव्यवस्था का शिकार होता जा रहा है। उसमें मनुष्य की हयता नहीं रह गई। सब लोग जैसे एक से असहाय, बेनाम, बेचारे हो गए हैं। ऐसी स्थिति में अधूरापन नंगापन उसके जीवन के आधारभूत सत्य हो गयें हैं। जिनके बीच ही अब उसे जीना होगा। इसलिये पूर्णता की खोज अब उसे अधूरेपन के बीच ही करनी होगी।

किंतु इसके साथ ही मानवीय अस्तित्व की सार्थकता की खोज भी अनिवार्य हो जाती है। आदमी न मशीन का पुर्जा और न अपने अस्तित्व का निश्चेष्ट साक्षी, वह नियामक भी है और संभावनों का स्त्रष्टा भी। वह परिवेश संबंधी भी है, पर अति प्रथा की क्षमता से परिपूर्ण है। वस्तुत– अधूरापन एक सापेक्ष स्थिति है, जिसका अहसास केवल पूरेपन के संदर्भ में ही संभव है।

प्रस्तुत नाटक में तिलचट्टा आतंकवादी का प्रतीक है। दूसरे अर्थ में वह मनुष्य की यौन भावना का प्रतीक है। तिलचट्टा नाटक "काला आदमी" से विकसित "काक्रोच" कहानी का नाट्य रूपांतर है। नाटक का प्रारंभ बेडरूम से होता है। बडे आकार के पलंग पर देव और केशी लेटे हुए हैं। वे दोनो बातें कर रहे हैं। देव नपुंसक पुरूष है, केशी एक अस्पताल में नर्स का काम करती है। देव उसके चरित्र पर संशय करता है। और केशी के पेट में जो बच्चा पल रहा है, वह डॉक्टर का है ऐसा मत देव का है। प्रस्तुत नाटक में देव और केशी मुख्य पात्र है। काला आदमी, पुलिस अफसर, दो सिपाही और पिण्डारी एक तथा पिण्डारी दो गौण पात्र हैं। इस नाटक में तिलचट्टा एक पात्र के रूप में नाटक के कार्यव्यापार में हिस्सा लेता है।[1]

पिछले कुछ वर्षों में जिन नाटकों ने साहित्य रंगमंच में क्रांतिकारी स्थितियाँ उत्पन्न की है उनमें एक नाम मुद्राराक्षस का सहज ही लिया जा सकता है। मुद्राराक्षस अपनी मौलिक प्रतिभा के बल पर वर्तमान विषमताओं, विडम्बनाओं व विसंगतियों को नाट्य विधा में उभारने में सफल रहे है। तिलचट्टा उनका बहुचर्चित व बहुप्रशंसित नाटक है, जिसमें स्त्री पुरूष के संबंधों की निर्मम चीरफाड के साथ साथ आज के मौजूदा सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक क्रूर दबावों के नीचे पीसते और कराहते हुए मानव की चीख को भी पकडने का प्रयास किया गया है।

तिलचट्टा अपने आप में एक विकास है। इसमें वह रेडियो के लिए लिखा नाटक है। "काला आदमी" । इसी "काला आदमी" का परिमार्जन कहानी बनी थी "काक्रौच"। दरअसल कहानी रूप में प्रकाशित "काक्रौच" प्रस्तुत नाटक का ही ड्राफ्ट था।

"तिलचट्टा" मानवीय नियति की एक ऐसी त्रासदी है जिसे निरंतर अपने मानवीय ऐतिहासिक आधार की तलाश है। नाटक में चरित्र नहीं यह त्रासदी ही प्रमुख है, सत्य है। त्रासदी ही एक ऐसी प्रमाणिक इकाई है जिससे इस रचना का नाटकीय इतिहास बनता है। प्रारंभ से अन्त तक यह त्रासदी ही है जो लगातार मंच पर रहती है। बाकी सबकुछ पात्र प्रतीक, देशकाल, घटनाएँ सब सिर्फ उसकी वहाँ मौजूदगी को प्रामाणिकता देनेवाले दस्तावेज है।[2]

केशी प्रस्तुत नाटक की नायिका है। वह देव की पत्नी है। वह अपने पति से यौनतृप्ति न पाने के कारण वह अन्य पुरूषों से संबंध रखती है। इसमें काला आदमी और डॉक्टर है। वह देव से घबराती नहीं। देव को यह बताने में हिचकती या डरती नहीं कि कोई काला आदमी उसका पीछा करता है। और बकरे की बोली बोलता है। वह यह भी बताती है कि डॉक्टर और हम पासवाले केबिन में चले गये थे, गर्भपात का इंजेक्शन लगवाने गयी थी तब उसके साथ डॉक्टर ने जो हरकतें की वह बताने में भी उसे शर्म नहीं आती। उसके विचार है।

"जानते हो देव, डॉक्टर ने इंजेक्शन दिया – कहने लगा कूल्हे पर लगाऊँगा। यहाँ तक साडी उठा दी थी – (नाभी की ओर इशारा) मेरा चेहरा लाल हो गया। डॉक्टर पाजी है। आधा

घंटा लगा दिया था। इंजेक्शन लगाने में। और परेशान ही करता चल गया – ब्लाऊज मैंने पकड रखा था – उसने खींचकर फाड दिया था।" उसके ये संवाद निर्लज्जता का प्रतीक है।

प्रस्तुत नाटक में देव और केशी अलग–अलग स्वप्न देखते है। जिसमें वह केशी के साथ एक घने जंगल में भटक गया है ।

केशी : इतने बडे जंगल में होकर निकलना नहीं चाहिए था। उफ अंधेरा कितना घना है। और झाडियां – इस अंधेरे में रास्ता भला मिले भी तो कैसे ?

देव : तुम्हें डर लग रहा है केशी ।

केशी :

देव : तुम्हें शायद डर लग रहा है। लग रहा है न ?

केशी : नहीं । मगर – मगर यह अंधेरा – नहीं कुछ दिखाई नहीं देता । तुम्हें डर लग रहा क्या देव ?

देव : मुझे ? न – नहीं तो। नहीं तो। बिल्कुल नहीं। थोडी उलझन लग रही है। यह जंगल खत्म ही नहीं हो रहा। तुम पीछे कहा रह जाती हो?[3]

इस जंगल में कोई केशी की साडी ओर ब्लाऊज खींचने की कोशिश करता है। आखिर में केशी कहीं गायब हो जाती है। फिर उसी जंगल में दो पिण्डारियों से देव की मूठभेड होती है, जिसमें दो पिण्डारी देव का गला घोटने की कोशिश करते है। इस प्रकार केशी का गायब होना ही देव को और भी अचंबित करता है और उसका संशय और भी दृढ होता है।[4]

दूसरा स्वप्न केशी देखती है। वह देखती है कि उसने कुत्ते सदृश्य बच्चे को जन्म दिया है। इसी बच्चे को देव और केशी दोनों मिलकर मारते हैं। बाद में आदमी से भी बडे आकार का तिलचट्टा आता है। जिसे केशी बहुत चाहती है, जो मनुष्य की यौन भावना का प्रतीक है। वह देव को बेहोश करता है और केशी को लिपट जाता है :–

केशी : (हँसते हुए) अरे, क्या कर रहे हो। मुझे गुदगुदी लग रही है – अरे ! (तिलचट्टा और ज्यादा लिपटने की कोशिश करता है । केशी उससे छूटकर

हँसती हुई भागती है। वह पीछा करता है।

केशी : अरेरे – छोडो न भाई। देखो, तुम्हारे नाखून चुभ रहे हैं – उफ – अलग हटो, क्या कर रहे हो? देखते नहीं हो, देव की लाश अभी यहाँ है।

छोडो – भाई

(देव को अचानक होश आता है। दो क्षण दोनों को देखता रहता है और बिल्ली की तेजी से तडपकर तिलचट्टा को पीछे से दबोच लेता है।)

केशी : देव

देव : अब देखता हूँ – छूट नहीं सकता – गला घोंट कर मार दूँगा । (गला दबाता जाता है। तिलचट्टे की कराह। सहसा केशी देव को दोनों हथेलियों से पीटने लगता है।)

केशी : देव छोड – दो – उसे। उसे छोड दो – नहीं – नहीं ।

अंत में वह तिलचट्टे को छुडाती है। तिलचट्टे का केशी को लिपटना, इसी का संकेत है, वह अन्य पुरूष से संबंध रखती है।[5]

समाज का हर बडा व्यक्ति, नेता, अधिकारी, पुलिस हो या इंजिनिअर, डॉक्टर आदि की तरफ देखने की दृष्टि एक अलग प्रकार की होती है। समाज में इनकी एक अलग छाप होती, जिन्हे मान सम्मान होता है। ये समाज के रक्षक होते,हैंसमाज की जिम्मेदारी, उनपर होती है। किन्तु आज न नेता अपना कर्तव्य निभाता है, न अधिकारी , जो स्वयं भ्रष्ट बन रहे हैं, इसमें डॉक्टर भी कम नहीं है। क्योंकि प्रस्तुत नाटक में केशी एक नर्स है। जो डॉक्टर के अस्पताल में काम करती है। केशी का पति देव नपुंसक है। वह उसे यौनतृप्ति देने में असफल है। इसलिए केशी और डॉक्टर के अनैतिक संबंध जुड जाते हैं। इसी डॉक्टर का बच्चा केशी के गर्भ बढ़ रहा है। देव केशी की तरफ एक संशय की दृष्टि से देखता है। इससे यह स्पष्ट होता है, कि डॉक्टर अपने नर्स के साथ नाजायज संबंध रखकर समाज में, परिवार में एक प्रकार का कोलाहल मचाता है।

केशी को जब बच्चा होता है तब केशी और देव दोनों मिलकर उस बच्चे को मारकर दफना देते हैं। इसी प्रकार डॉक्टर, केशी, देव इनके चरित्र में रक्षक के बदले वे भक्षक ही नजर आते है। उन्हें पैदा हुआ बच्चा कुत्ते जैसा ही नजर आता है। उसके झबरे, बाल थे, उसे चार पैर भी थे, और दुम भी।

आज हम देखते है स्त्री अपने पति की सेवा करना भूल गयी है। वह न तो उसे अपना प्रेम देती है ओर न ही उसे एक पति के रूप में स्वीकारती है। आज की नारी में पतिव्रता का अभाव दिखाई देता है। पति नपुंसक होने के कारण वह यौनतृप्ति नहीं पा सकती इसी कारण वह अन्य पुरूषों से संबंध रखती है। और अपनी इच्छा को प्राप्त करती है। केशी का पति भी नपुंसक है, और केशी भी डॉक्टर से संबंध रखती है। केशी में भी पतिव्रता का अभाव दिखाई देता है।

डॉ.शेखर शर्मा के अनुसार – वस्तुतः आज की नारी भी वह नारी नहीं रहीं जो पुंसत्वहीन पुरूष को पति रूप में पाकर भी, सती बन रहती है और सेक्स की यातना को किन्हीं अन्य माध्यमों से अपनी इच्छाओं का दमन कर झेल लेती है।[6]

मनुष्य मनुष्य न होकर पशु बन गया है। वह मनुष्य की तरफ मनुष्य की दृष्टि से न देखकर पशु की दृष्टि से देखता है। आज मनुष्य हिंसक, क्रूर, घातक बनता चला जा रहा है। पशु जैसी विशेषताएँ मनुष्य में दिखायी देने लगी है। मनुष्य के भीतर मौजूद पाशिवक संस्कारों ने मनुष्य को पशु बना दिया है। देव और केशी के संवाद पशुता का निर्देशक है –

केशी : औफ ये कुत्ते ! दरवाजे ठीक से बंद है न ? लगता है ये दरवाजे तोडकर घुस आयेंगे ।

देव : लेकिन वह था बड़ा मजबूत । तुमने कितनी जोर से उसकी गर्दन दबाई थी। मगर उसने तडपकर गर्दन छुडा ली थी। बल्कि वह शायद काटने की कोशिश भी कर रहा था। ध्यान है न तुम्हें ? उसके बाद मैंने भी जोर लगाया। मैंने

पूरे जोर से उसकी गर्दन दबायी तब जा कर कहीं वह मरा था। काश हमारा बच्चा कुत्ते के पिल्ले जैसा न पैदा होता और हम उसे वापस लेजा सकते[7]

प्रस्तुत नाटक में पशुकामुकता भी नजर आती है। केशी का पति देव नपुंसक है। केशी अपनी यौनतृप्ति के लिए अन्य पुरूषों से संबंध रखती है। किंतु यह संदेह उत्पन्न होता है कि क्या केशी का संबंध देव के कुत्ते के साथ था ? क्योंकि केशी को जो बच्चा पैदा हुआ था वह कुत्ते सदृश्य था – देव के निम्न विचार इसी की ओर संकेत करते है।

देव : लेकिन तुम सोचकर, देखो, केशी यह बहुत अच्छा लगता है? इस तरह का बच्चा लेकर क्या हम लौट सकते थे? कैसे लौटते, तुम्हीं सोचो। और सच यह है कि वह मेरा बच्चा था ही नहीं। यह बात साफ है। उसके थूथनी थी कुत्तेवाली । झबरे बाल, पंजे और चार पैर थे। दुम तक भी। देखा नहीं था, उसकी, दुम कितने घटिया ढंग से हिल रही थी? हां वह बडा होकर अच्छा कुत्ता बनता इसमें शक नहीं । लेकिन केशी तुम्हें ऐसा बच्चा हुआ कैसे ?

देव के ये उपर्युक्त शब्द से सचमुच यही लगता है कि, केशी का संबंध कुत्ते के साथ था। किंतु केदारनाथ ने इस संबंध के बार में अपने विचार प्रयुक्त किये है – "देव में मरे कुत्ते के प्रति मोह स्वाभाविक है क्योंकि उसके कुत्ते ने जो उसकी पत्नी को दिया वह खुद न दे सकता।[8] केदारनाथ सिंहजी ने भी यह स्पष्ट किया है कि केशी का संबंध देव के कुत्तों के साथ था। फिर भी केदारनाथजी ने इसपर आपत्ती उठायी है कि, हम कैसे कह सकते हैं कि देव के कुत्ते के साथ केशी का संबंध है। केशी के निम्न संवाद भी यह सोचने के लिए बाध्य करते है कि उसका और कुत्ते का संबंध नहीं था –

केशी : तुम क्या मुझ पर शक कर रहे हो? मैंने कुत्ते को डी.डी.टी. खिला दी होगी ?

केशी : और वैसे तो मुझे उस कुत्ते से नफरत थी। उसकी आँखें बेवकूफों जैसी थी थूथनी बेतुके ढंग से नुकीली थी। फिर वह हर किसी पर भौंकता था और बहुत भद्दे तरीके से भौकंता था। बल्कि भौंकने से मना करने पर वह मुझ पर ही भौंकने लगता था।[9]

केशी का यह संवाद इसी की ओर भी संकेत करता है कि उसका संबंध नहीं। उसका जब बकरे की बोली बोलने आदमी से प्यार होने के कारण, वह कुत्ते को मारती है क्योंकि वह अपने प्रेम में कुत्ते को बाधक, समझती है, इसलिए वह उसे डी.डी.टी. खिलाकर मारती है। इसी कारण हो सकता है कि उसके मन में जो बात बैठ गयी है, वही बात उसे अपने स्वप्नों में दिखाई देती है। इसलिए वह कुत्ते सदृश्य बच्चों को दोनो मिलकर मार देते है।

नारी प्रेम समर्पिता है। पति–पत्नी के बीच में जो मधुर संबंध होते है वह पारिवारिक सुखशान्ति का प्रतीक है।[10] लेकिन हम समाज में देखते हैं कि कई पति और पत्नि के बीच ऐसे संबंधों का अभाव नजर आता है। इसके पीछे कई कारण जुडे रहते हैं। प्रेम, आदर, सम्मान के कारण आज समाज विघटित हो रहा है। तिलचट्टा नाटक में भी इसी प्रेम, सुख–शांति का अभाव नजर आता है। देव और केशी अपना जीवन निरर्थक बिताने, उनके जीवन में कोई महत्वपूर्ण लक्ष्य नहीं है। वे अपने बिस्तर पर लेटे लेटे कुत्ते, तिलचिट्टा, और चूहे की बातें करते रहते हैं। पति और पत्नी के बीच जो सम्बन्ध होना जरूरी होता है जो विश्वास होना चाहिए, इसका भी अभाव देखने मिलता है।

आज "अर्थ" को समाज में बडा महत्व है। आज मनुष्य जिस काम को न करने की बात करता, किन्तु अपनी मजबुरी के कारण उसे वह काम करना पडता है। किन्तु समाज में ऐसे बहुत से लोग है जो धन को कमाने, प्राप्त करने के लिए कुछ भी करते हैं। समाज में अर्थ के प्रति आकर्षण बढता जा रहा हैं। मनुष्य के पास अगर पैसा है तो वह अपना जीवन अच्छी तरह से गुजर सकता है। अन्यथा उसकी हालत कुत्ते के समान है।

कार्ल मार्क्स के अनुसार – "अर्थ ही जीवन का विधायक है। युग का राजनैतिक और सामाजिक घटना–क्रम तात्कालिक आर्थिक प्रतिक्रिया से प्रभावित रहता है और सामाजिक तथा राजनैतिक विकास आर्थिक वर्गों से संघर्ष के आधार पर होते है।"

आर्थिक विषमता के कारण मानव जीवन दिशाहीन होता नजर आ रहा है। तिलचट्टा नाटक में देव की पत्नी केशी नर्स है, वह अस्पताल में नौकरी करती है। देव नामर्द है, इसलिए केशी अप्नी यौनतृप्ति के लिए वह डॉक्टर से संबंध रखती है। देव यह जानता कि उसके पेट में जो बच्चा है वह उसका न होकर डॉक्टर का है। किन्तु उसमें विरोध करने की क्षमता नहीं है। वह केवल नफरत करता है।

मनुष्य को अपनी गृहस्थी चलाने के लिए उसे नौकरी की आवश्यकता होती है। मनुष्य को नौकरी की पराधीनता और परवशता के कारण उसे गलत काम भी करने पडते हैं। इसी परवशता के कारण मनुष्य एक यंत्र बन गया है। इसी यांत्रिकता के कारण मनुष्य के जीवन में सुख का अभाव दिखाई देता है। उसे अपना जीवन निरस लगता है। स्त्री पुरूषों के संबंधों में भी यांत्रिकता के दर्शन होते हैं। तिलचट्टा में केशी और देव का जीवन भी यांत्रिकता से ग्रस्त है। केशी और देव के निम्नलिखित संवाद यांत्रिकता के ही द्योतक है –

केशी : रात में बिस्तर पर लेटकर तिलचट्टे और चूहों की बात क्या बहुत अच्छी लगती है ? तुम लेट क्यों नहीं जाते ?

देव : हां (लेटता है)

देव : मगर केशी बिस्तर पर और दूसरी बात हो क्या सकती है अब ? बिस्तर पर करने लायक बातें अब अच्छी ही कहा रहीं? तुमने मफतलाल को देखा है? तुम बना रही थी उसको प्लूरिसी हो गयी थी। रोज सुबह टहलने निकलता है। फिर गिनकर दो अंडे खाता है और नपा हुआ आधा लिटर दूध पिता है। नापकर ही एक मील टहलता है। सिर झुकाये हुए वह इस तरह टहलने निकलता है जैसे कुछ हो रहा हो। ठीक वैसी ही जाप–जोख, केशी बिल्कुल

ठीक वैसी ही यांत्रिक । बिस्तर पर आने के बाद थोडे–से संवाद फिर कपडे उतारना। थोडी देर बाद कपडे पहन लेना और बत्ती जलना फिर बाथरूम जाना।हर रात मैं पूछता हूँ – ओढने की चादर रख ली? तुम पूछती हो घडी में चाबी दे दी ? पानी का गिलास रख लिया ? बत्ती दुबारा बुझ जाती है।[11]

इसी प्रकार देव का जीवन निरस और यांत्रिकता के कारण ऊब चुका है। साथ ही साथ नौकरी की पराधीनता ही केशी को डॉक्टर के साथ सबंध रखने के लिए बाध्य करते हैं। केशी के संवाद नौकरी की पराधीनता की ओर ही संकेत करते है –

केशी : तुम्हें याद तो होगा – कितने दिन हो गये – मैं अस्पताल से लौटी थी। कपडे बदलने लगी, उसी वक्त तुमने मेरे कुल्हे पर पडे एक नीले निशान की तरफ इशारा किया था। मैं थकी हुयी थी। बिना ध्यान दिये मैंने कहा दिया था .... यह निशान ? और अस्पताल में मेज से टकरा गयी थी। तुम थोडा निराश हो गये थे।

देव : हां, मुझे याद आ गया। मैंने कहा था – ऐसे निशान मेज से टकराने से नहीं बनते ।

केशी : मैंने – मुझे अचानक याद आ गया था। ..... मैने मुस्कराकर कहा था – हां आज डॉक्टर डयूटी पर था । बहुत पाजी है।[12]

केशी डॉक्टर का पाजी कहती हैं, किन्तु जब डॉक्टर उसे पास वाले केबिन में ले जाता है और उसके साथ पाजीपन से पेश आता है तो वह उसका विरोध नहीं करती। उसका विरोध न करना यह भी कारण हो सकता है नौकरी की पराधीनता का।

जीवन में व्याप्त एकरसता, उकताहट और यांत्रिकता से छुटकारा पाने के लिए देव और केशी एक तीसरे आदमी की कल्पना करते हैं – "उन्हें अपने जीवन में कोई संभावना नहीं दिखायी देती। अत: तरह–तरह की संभावनाओं को वे अपने मानसिक प्रेक्षेपण मे देखते है। काले

डॉक्टर और बकरे की बोली बोलने वाले काले आदमी की कहानी इसी का ही प्रतिफलन है।[13]

देव : काले डॉक्टर की कहानी गढ–गढकर पांच बरस उकताहट तोडी । फिर उसे बकरे की बोली बोलनेवाले आदमी की कहानी आ गयी उसस पांच दिन भी ऊब नहीं टूटी – पाँच दिन में ही वह बासी पड़ गयी।[14]

पुलिस समाज के रक्षक होते। उन्हीं पर समाज के संरक्षण का काम होता है। किन्तु आज की पुलिस व्यवस्था केवल उसी को सजा देती है जिसके पीछे कोई नहीं है, जो निरीह, निरापराध है। आज पुलिस व्यवस्था भ्रष्ट है। जो अपराधी है, उनकी तरफ आँख नहीं उठाती। जनता के मन में पुलिस के प्रति एक अलग भाव था वह कम होता जा रहा है।

तिलचट्टा नाटक में आतंकवादी को गिरफ्तार करने के बाद उसे लॉकप में बंद किया जाता है। किंतु वह आतंकवादी पुलिस की आँखें में धूल झोंककर वह गायब हो जाता है। इसी प्रकार आज की पुलिस व्यवस्था में सतर्कता का अभाव है। इसी वर्तमान पुलिस व्यवस्था पर नाटककारने करारा व्यंग्य कसा है –

देव कहता है : तुमने खिडकी दरवाजे देख लिये थे, ठीक से बंद हैं? अब वे लोग उसे नहीं पकड सकते, मैं शर्त लगा सकता हूँ। पुलिस हवालात से निकालकर उसको जेल ले जा रही थी। पता नहीं ये लोग होशियारी क्यों नहीं बरतते। फिर वह खासा खतरनाक आदमी था।[15]

इससे यह स्पष्ट होता है कि पुलिस आतंकवादी के बारे में सतर्क नहीं है। जब दूसरा पिण्डारी का बाप पुलिस बताता है मफतलाल खानेवाले तेल में इंजन का तेल मिलाकर बेचता है। इसी सोचने पर पुलिस ने मेरे बाप को जेब कतरा कहकर पकड लिया और इतना पीटा की वह मर गया।

दूसरे पिण्डारी के उपर्युक्त संवाद भी पुलिस व्यवस्था की भ्रष्ट विचारों पर प्रहार करती है। पहला पिंडारी और दूसरा पिंडारी की बातचीत बौध्दिक नपुंसकता को उभारती है। आज

के बुध्दिजीवी पर करार व्यंग्य कसा है साथ ही साथ आज के साहित्य पर भी दूसरा पिंडारी व्यंग्य कसता है। देव जब दूसरे पिंडारी से कहता है किसी गला घोंटना जुर्म है।

पहला पिंडारी : किताबों में जानता हूँ किताबें। हरामी आदमी लिखते हैं किताबे। और किताबों का हमसे क्या लेना देना ।

दूसरा पिंडारी : किताबों में मेरा नाम है। इसका नाम है ? मेरे भाई का या मेरे बाप के बाप के बाप का नाम है। नहीं है।

पिंडारी के उपर्युक्त संवाद आज के साहित्य पर करारा व्यंग्य कसते है। पिंडारियों के निम्न संवाद बौध्दिक नपुंसकता को उभारते है।

दूसरा पिंडारी : एक बार मैंने देखा था – वह बुध्दीजीवी था। कुर्सी के ऊपर आराम से बैठ जाता था – दोनो टाँगे सामने की मेज पर फैला लेता था । होठों में बहुत मोटी सी बिडी दबा लेता था और बीच बीच में अपने कान के पीछे खुजाता था।

पहला पिंडारी : लेकिन इसमें से हम तो कुछ भी नहीं कर सकते। सिर्फ कान के पीछे खुजा सकते है।[16]

मनुष्य का जीवन असंगति से घिरा है। वह अगर इस असंगति से दूर जाना चाहता है, तो भी वह जा नहीं सकता। मनुष्य के जीवन मे असंदिग्धियाँ भी होती है। किंतु यह संदिग्धियाँ मनुष्य के मन में संभ्रम पैदा करती है। प्रस्तुत नाटक में इसका अधिक प्रयोग देखने को मिलता है।

मुद्राराक्षस के अनुसार हर सामाजिक यथार्थ के दो सत्य होते है, जो मानवीय संवेदनाओं को आकार देते है और जिनकी प्रामाणिकता सामाजिक दृष्टि से संदिग्ध होने के बावजूद कहीं मानवीय नियति का हिस्सा बनती जाती है। इन्हीं संदिग्धियों से मानवीय नियति की त्रासदी के यात्रा पथ का मानचित्र तैयार होता है। इसलिए अगर असंदिग्ध कुछ है तो वह त्रासदी और

बाकी सब संदिग्धियाँ का मजमुआ।

इसी संदेग्धियों का उदाहरण निम्नलिखित रूप में देखा जा सकता है –

जो आव्रंकवादी फरार है उसका और केशी का परिचय है। नहीं है। बकरे की बोली बोलनेवाले आदमी को केशी जानती है। नहीं जानती है। केशी के पेट में बच्चा देव का नहीं है। डॉक्टर का है नहीं है। केशी कुत्ते को मारती है। नहीं मारती। कुत्ते को दफनाते वक्त कुत्ता जिंदा था। नहीं था, पुलिस स्टेशन की घडी देव की घडी है। नहीं है, केशी के गर्भ को गिराने के लिए दवा लि। नहीं ली। केशी के अस्पताल का डाक्टर आतंकवादी है नहीं है। नींद की गोलियों की वजह से देव की मृत्यू हुई। नहीं हुई। देव नामर्द हैं । नहीं है इ.

नाटक में चरित्र नहीं यह त्रासदी ही प्रमुख है । इस नाटक में किसी व्यक्तित्व को उभारने का उतना प्रयास नहीं है।जितना पात्रों के चरित्र को संदिग्ध बनाने का। इसमें मानव नियति ही मुख्य है। दशरथ ओझा के अनुसार – "नाटककार ने पात्रों के संदिग्ध चरित्रों का निर्माण इस उद्देश्य से किया है कि प्रत्येक दर्शक अपनी–अपनी रूचि योगयता के अनुसार उसका चित्र खींच सके।"[17]

डॉ.गोबिंद चातक के अनुसार मुद्राराक्षस अपने नाटकों में मानव मन की ढकी परतों और अव्याख्यायित रिश्तों को उधेडने का प्रयत्न करते हैं। उनके नाटकीय पात्र ऐसे लोग होते हैं जो अन्दर से खंडित हो चुके होते हैं और उनके अलग–अलग खंड ही जैसे समय–समय पर मुखर हो उठते हैं जिससे वास्तविकता के बजाय आंतरिक विरोध, द्विपक्षी उक्तियाँ और संदिग्धियाँ उभरकर सामने आती हैं। इसे एक ही स्थिति का पात्र को दोन विभिन्न कोणों से देखना कहें या सार्वभौम संत्याशें", "द्विपक्षीय संदिग्धियों" की संयोजना जिनके माध्यम से लेखक एक या दूसरी बात कहने के बजाय एक संपूर्ण त्रासदी को व्यंजित करने का प्रयास करता है।[18]

हमारे देश में सबसे बडी समस्या है जनसंख्या। इसी जनसंख्या ने हर क्षेत्र में हलचल मचा दी है। आज इसी जनसंख्या के कारण महंगाई बढ रही है, युवक बेरोजगार नजर आ रहे हैं,

बेकारी की समस्या और भी गहरी बनती जा रही है। आज युवक दर दर भटक रहा है। उसे नौकरी पाने के लिए उसे बडी मेहतन करनी पड रही है। आज के जीवन में मनुष्य अपनी–अपनी सोच रहा है। उसका जीना हराम हो गया है। इस जनसंख्या ने देश के विकास को चोट पहुँचायी है। अगर जनसंख्या कुछ कम होती तो और भी देश का विकास नजर आता है। केशी के निम्न संवाद –

हर तीसरे मिनट पैदा हो जानेवाले आदमी के बच्चे औरइस पिल्ले में। वे पैदा होते वक्त चाहे जो हों, जीते सिर्फ कुत्तों की तरह हैं। उनके दुमें नहीं होती, यूथनियाँ नहीं होती। लेकिन –

केशी का यह संवाद आज की बढती लोकसंख्या पर करारा प्रहार करती है।

विज्ञान के विकास के कारण रूढियों और अंधविश्वासों के प्रति कुछ मोह भंग हुआ है। आज धार्मिक स्थानों में भी सामाजिक मूल्य टूट गये हैं। आज हम मंदिर में जाते वक्त किसी दूसरे व्यक्ति को चलने की बिनती करते हैं, इसके पीछे हमारा यह उद्देश्य होता है कि हमारे जूते बाहर निकाले होते है, वह कही गायब न हो जायें। प्राचीन समय में हमारे मन में ईश्वर के प्रति प्रेम था किंतु आज युवा वर्ग नास्तिक बनता जा रहा है। पहले अगर किसी की मृत्यू हो जाती है तो उसके प्रति हम भी उसके दु:ख में शामिल होते थे। किंतु आधुनिक काल में इन सभी का अभाव दिखाई देता है। आज मरे व्यक्ति के प्रति शोक प्रकट करना, एक शिष्टाचार हो गया है। किंतु यह शोक प्रकट करते समय लोगों के मन में उसके प्रति न प्रेम भावना होती है और ना ही दु:ख। तिलचट्टा नाटक में देव और केशी अपने कुत्ते सदृश्य बच्चे को दफना देते है, और वे भगवान से उसके लिऐ लंबी नींद आराम और शांति की प्रार्थना करते यह एक दिखावा है। इसमें भी व्यंग्यात्मकता नजर आती है। क्योंकि वह पहले उसके प्रति द्वेष प्रकट करता है और बाद में हमदर्दी दिखाता है।

तिलचट्टा आतंकवादी व्यक्ति का प्रतीक है। तो दूसरे अर्थ में वह सडन, सीलन , गंदगी और अंधेरे में रहनेवाली मनुष्य की यौन भावना का भी प्रतीक है। देव कहता है –

तिलचट्टे बडे चालाक होते है। बत्ती जलाते ही वहीं गायब हो जायेंगे। पता नहीं कैसे पैदा होते है ये। इन्हें खत्म करना बहुत मुश्किल होता है –

नाटक के प्रारंभ में पुलिस के सायरन कि आवाज और देव के कुछ संवाद भी आतंक और डर का माहौल निर्माण करते है –

> "तुम नहीं जानती केशी । यह असंभव है। आतंकवादियों से बचा नहीं जा सकता। मफतलला के करोडपति चाचाने अपने आपको ताली के अंदर बंदकर लिया था। नाश्ता–खाना वह एक सूराख से लेता था और सुराख अच्छी तरह बंद कर लेता था। ठीक तारीख पर उसके कमरे में आग लग गयी और वह जलकर राख हो गया।

नाटक में आज समाज में व्याप्त आतंकवादी प्रवृत्तिपर भी व्यंग्य कसा है। केशी और देवा का वार्तालाप भी इसी की ओर संकेत करता है –

केशी : दरवाजे ठीक से बंद है न ?

देव : हाँ, लेकिन फायदा क्या ? मफतलाल का चाचा वह तो कितने तालों के अन्दर बंद था। सूराख से खाना पिना नाश्ता लिया करता था –

केशी : मगर ये कुत्ते है ।

देव : उससे क्या फर्क पडता है। जो नीले कागज पर सूर्ख बाल प्वाइंट वाले कलम से धमकी भरे खत लिखते हैं। वे इनसे क्या कम है। हो सकता है, ये कुत्ते भी हमे बाल प्वाइंट वाले कलम से खत लिखे।[19]

इसी प्रकार नाटक में आतंक उभरकर आया है।

समाज में प्रत्येक स्तर पर मूल्य विघटन दिखाई देता है। पुराने मूल्य नष्ट होते जा रहे हैं, और उसकी जगह नये मूल्यों ने ली है। पहले स्त्री पति के मृत्यू के बाद, किससे शादी तक नहीं करती थी, वह अपने पति को परमेश्वर मानती थी, उसे प्यार देती थी, पतिव्रता का

धर्म निभाती। लेकिन आज की नारी न पति को स्वीकारती है, और न ही पतिव्रता का धर्म निभाती। वह अनेक पुरूष से यौन संबंध रखती है। पहले जो पाप था वह आज पुण्य बन गया है। पहले पुण्य था वह आज पाप बन गया है।

नाटक में आतंकवादी महात्मा गांधीजी की समाधिपर बम लगता है, मफतलाल खाने के तेल में इंजन का तेल मिलाकर बेचता है, यह बात जब दूसरा पिंडारी का बाप पुलिस को बता देता है तब उसे इतना मारती है कि अखिर उसकी मृत्यू हो जाती है, लडाई के समय, मिनस्टर का बेटा जवानों की जर्सिया चोर बाजार में बेचता है। यह जब दूसरे पिंडारी का भाई बताता है तो उसका गला काटकर मार दिया जाता है, दूसरे पिंडारी की बहन उसके खोज लेने जाती है, उसका पता ही नहीं लगता।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि आज मानवीय मूल्य विघटित होते जा रहे है, मानव का जीवन परिवर्तनशील है, इसी कारण हर क्षेत्र में बदलाव नजर आ रहा है, पुराने मूल्य घटकर नये मूल्य के उदय के कारण प्रत्येक क्षेत्र में मूल्य विघटन हो रहा है।

नाटक के अंत में पुलिस आतंकवादी का पीछा करती है, वह आतंकवादी केशी के घर में घुस आता है। केशी उसकी सेवा भी करती है, बाद में वह आतंकवादी खुली हुई खिडकी से बाहर निकलता है। उसके जाने के बाद केशी उस व्यक्ति के जूते और जूराबे अपनी सीने से लगा देती है।

तिलचट्टा भ्रष्टाचार और आतंक का प्रतीक है जो समाज के ऱ्हास को व्यक्त करता है। वह विसंगति और आतंक का प्रतीक है। उसे अंधेरा प्रिय है। बत्ती जलाते ही वे गायब होते है।' मानव मानवता के बीच ये दीवार बने हैं। पता नहीं कैसे पैदा होते है ये इन्हें खत्म करना बहुत मुश्किल होता है। क्योंकि एक तिलचट्टा मरता है तो ग्यारह पैदा हो जाते हैं। शोषित और नैतिक शक्तियों को इकठ्ठा कैसे करे इसकी लेखक को चिंता है। आतंकवादियो की दवा नहीं है।

डॉ.चंद्रशेखर के अनुसार – "यह तिलचट्टा" कौन है? और कोई नहीं प्रत्युत "मरजीवा" और "तेंदुआ" ही है। योर्स फेथफुली का क्लर्क एक क्लर्क है जो लाल झण्डे को अपना कटा हुआ हाथ मान लेता है। वे सभी पुनः एक होकर "तिलचट्टा" की भूमिका में उतरे हैं। वहाँ काला आदमी है और काला डॉक्टर भी । वही बकरे की बोली बोलने वाला गुंडा भी है। वहीं भौकने वाला कुत्ता भी है और वहीं एक अंश में केशी भी। वही पिंडारी एक भी और दो भी।[20]

डॉ.प्रेमलता के अनुसार – तिलचट्टा समाज में बढती स्थितियों, हिंसा, सेक्स, अव्यवस्था, क्रूरता के प्रति आक्रोश, मृत्यू के होने न होने की संदिग्धियों के बीच मानवीय त्रासदी का प्रतिबिंब है।[21]

इस प्रकार तिलचट्टा में मानव की पशु वृत्ति को प्रतीक के द्वारा व्यक्त किया गया है। नाटक के पात्र, संवाद तथा घटनाओं को देखते हुए असंगत नाटक की परंपरा में आते है। इस नाटक में यह प्रतीक सार्थक दिखायी देते है।

संदर्भ :-

1. जयवंत रघुनाथराव जाधव – मुद्राराक्षस के असंगत नाटक एक अनुशील, प्र.सं.1995 पृ.91
2. मुद्राराक्षस – तिलचट्टा, (चंद बातें), द्वि.सं.1976, पृ.
3. वही, पृ.32
4. जयवंत रघुनाथराव जाधव – मुद्राराक्षस के असंगत नाटक एक अनुशीलन, प्र.सं.1995, पृ.123
5. मुद्राराक्षस – तिलचट्टा, द्वि.सं.1976, पृ.62–63
6. डॉ.शेखर शर्मा – समकालिन संवेदना और हिंदी नाटक, प्र.सं.1988, पृ.223
7. मुद्राराक्षस – तिलचट्टा, द्वि.सं.1976, पृ.57
8. डॉ.केदारनाथ सिंह – हिंदी के प्रतीक नाटक और रंगमंच, प्र.सं.1985, पृ.165
9. मुद्राराक्षस – तिलचट्टा, द्वि.सं.1976, पृ.53
10. डॉ.राजश्री शुक्ला – साठोत्तरी हिंदी नाटकों की सामाजिक चेतना, प्र.सं.1994, पृ.73
11. मुद्राराक्षस – तिलचट्टा, द्वि.सं.1976, पृ.22–23
12. वही, पृ.69
13. जयवंत रघुनाथराव जाधव – मुद्राराक्षस के असंगत नाटक एक अनुशीलन, प्र.सं.1995, पृ.88
14. मुद्राराक्षस – तिलचट्टा, द्वि.सं.1976, पृ.91–92
15. वही, पृ.24
16. वही, पृ.42–42
17. डॉ.दशरथ ओझा – आज का हिंदी नाटक : प्रगति और प्रभाव, प्र.सं.1984,पृ.103
18. डॉ.गोविंद चातक – आधुनिक हिंदी नाटक : भाषिक और संवादीय संरचना, प्र.सं.1982, पृ.199–200

19. मुद्राराक्षस – तिलचट्टा, द्वि.सं.1976, पृ.55

20. डॉ.चंद्रशेखर – समकालिन हिंदी नाटक : कथ्य चेतना, प्र.सं.1982, पृ.417

21. प्रेमलता – आधुनिक हिंदी नाटक और भाष्य की सृजनशीलता, सं.1993, पृ.262